Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 7 | JULY 2023

भारतीय इतिहास में विभिन्न विद्याओं और कला–कौशलों की समृद्धता

राजेश कुमार मालविया [1]

[1] सहायक आचार्य (अतिथि शिक्षक), इतिहास, राजकीय महाविद्यालय, जैतारण, जिला–पाली (राज.)

ABSTRACT:

इतिहास का तात्पर्य किसी निर्मूल, निराधार अथवा कपोल–कल्पित वस्तु, बात या घटना से नहीं, प्रत्युत् निश्चित रूप में विगत में जिसकी सत्ता या विद्यमानता रही– चाहे वह सम्प्रति उपलब्ध है या अनुपलब्ध, विगत में शत–प्रतिशत होने के आधार पर इतिहास ही कहा जाता है। इस दृष्टि से भारत में घटित, विद्यमान व सम्बद्ध बातों, घटनाओं, वस्तुओं और तत्वों की सत्ता भारतीय इतिहास की परिधि के अन्तर्गत परिगणित होती है, इसमें कोई दोराय नहीं। वस्तुतः इतिहास की जानकारी एवं उपलब्धि हेतु विभिन्न स्रोत व साधन रहते ही हैं। प्रसंगत यहाँ हमारा अभीष्ट भारतीय इतिहास में विद्यमान, प्रचलित एवं समृद्ध रही विभिन्न विद्याओं और कला–कौशलों की जानकारी और वैशिष्ट्य को प्रस्तुत करना है, वह भी सप्रमाण प्राचीन परिदृश्य में। इनकी यथार्थ जानकारी के प्रमाणिक स्रोत व साधनों के रूप में हमारा प्राचीन लिखित वाङ्मय, जिसे साहित्यिक स्रात कहा जा सकता है, इसके अतिरिक्त पुरातात्विक स्रोत– विभिन्न अभिलेख, शिलालेख, स्मारक, मुद्राएँ, चित्र, चैत्य, स्तूप, ऐतिहासिक एवं विदेशी विवरण आदि–आदि विविध स्रोत भारतीय इतिहास की यथार्थ जानकारी के लिए महत्वपूर्ण व प्रमाणिक आधार हैं।

KEYWORDS:

विद्याधर, निरुक्त, शल्य चिकित्सा, अर्द्धनारीश्वर

विषय–विवेचन–

इतिहास का तात्पर्य ही है– जो पूर्वकाल में निश्चित रूपेण ही हो चुका है अथवा विगतकाल में जिसका अस्तित्व अवश्यमेव था। "इति ह आस" अर्थात् ऐसा निश्चित ही हुआ था– इस व्युत्पत्ति के अनुसार 'इतिहास' शब्द विगत को प्रमाणित व निश्चित करता है। इसी प्रकार "पुरा विद्यते इति पुराणम्"[1] इस व्युत्पत्ति– अनुसार 'पुराण' शब्द भी प्राचीनकाल में अवश्यमेव विद्यमान की पुष्टि करता है। निरुक्त के प्रणेता 'यास्क' महोदय पुराण को 'पुरा' अर्थात् प्राचीनता या परम्परा से सम्बद्ध करते हैं, तो वहीं विभिन्न प्राचीन ग्रन्थों एवं शास्त्रों ने प्राचीन काल में अवश्यमेव अस्तित्वमान बातों व घटनाओं को इतिहास एवं पुराण बतलाते हुए इनकी प्राचीनता, प्रमाणिकता तथा तथ्यात्मकता स्वीकार की है। इस प्रकार इतिहास का तात्पर्य विगत वास्तविकता से है। यहाँ हमें इतिहास में विभिन्न विद्याओं और कला–कौशलों की समृद्धता की जानकारी अभीष्ट है। कारण, आधुनिक काल एवं उत्तरोत्तर बढ़ते कालक्रमानुसार अद्यतन प्रचलित, विकसित एवं नित–नवीन आविष्कृत विभिन्न विद्याओं, कलाओं एवं तकनीकी कौशलों से तो सभी परिचित हैं तथा वर्तमान पीढ़ियाँ इनका लाभ भी ले रही हैं और अब भावी पीढ़ियाँ भी इन्हें आवश्यकतानुसार अपनी जीवनशैली का अंग बनाकर चलेंगी। परन्तु आधुनिक और वर्तमान पीढ़ियों को यह ज्ञात नहीं कि हमारा प्राचीन इतिहास बहुत–सी बातों के साथ–साथ इस दृष्टि से भी कितना गौरवशाली व समृद्ध रहा है और वर्तमान विज्ञान व तकनीकी के आविष्कार व विकास से पहले भी हम ऐसी–एसी विद्याओं, विज्ञान और कला–कौशलों के धनी और अधिपति रहे हैं, जिनसे अचरज भरे कार्य होते देखे गए हैं। जीवन के दैनिक क्रियाकलाप और अपरिहार्य आवश्यकताओं व जीविकोपार्जन हेतु किए जाने वाले विविध कार्यों के सम्पादन से लेकर मनोरंजन, चिकित्सा, सौन्दर्य–श्रगार, साज–सज्जा, शिक्षण–प्रशिक्षण, शिक्षा–शास्त्रज्ञान, युद्ध, स्मारक, स्तूप, मंदिर, मठ, मूर्तियाँ, भवन निर्माण तथा जीव–जगत् और मानव से सम्बन्धित विविध क्षेत्रों में इन विद्याओं व कलाओं का उत्कर्ष देखा जा सकता है।[2]

हमारी संस्कृति और इतिहास के गर्भ में एक स बढ़कर एक विद्याओं और कलाओं के आगार या भण्डार भरे पड़े हैं। सर्व प्राचीन शास्त्र– 'वेद' विभिन्न विद्याओं के आकर हैं– "वेदस्य सर्वविद्या निधानत्वम्" तो महाभारत जैसा विशालकाय महाकाव्य एवं इतिहास ग्रन्थ – "यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।"[3] द्वारा उस तथ्य का प्रकटीकरण करता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि यह ज्ञान–विज्ञान और सामग्री का विश्वकोश है। ग्रन्थ का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वास्वत में यह विभिन्न विद्याओं, कलाओं और ज्ञान–विज्ञान का भण्डार है। साथ ही केवल इतिहास नहीं, प्रत्युत् 'इतिहासोत्तम' है– "इतिहासोत्तमे यस्मिन्नर्पिता बुद्धिरुत्तमा।"[4] इस इतिहास में विभिन्न विद्याओं तथा कला–कौशलों व ज्ञान–विज्ञान, यहाँ तक कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड व सृष्टि, ग्रह–नक्षत्र, जीवात्मा–परमात्मा तथा भूत, वर्तमान और भविष्य तक के समस्त रहस्यों को जानने, समझने की विद्याओं का अस्तित्व देखा जा सकता है। स्वयं ग्रन्थकार ने इस तथ्य को अभिव्यक्त किया है– "न्यायशिक्षाचिकित्सा..... दिव्यमानुषसंज्ञितम्।।"[5]

इसी तरह नाट्यशास्त्र विभिन्न, बल्कि कहना चाहिए कि समस्त विद्याओं, शिल्प और कला–कौशलों का भण्डार है; अतैव भरतमुनि को यह कहना पड़ा–

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत् कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते।।[6]

उनका यह शास्त्र समस्त कलाओं का विश्वकोश है। इसी तरह ज्योतिष विद्या का अद्वितीय ज्ञान प्राचीन समय में देखा जा सकता है। आर्यभट्ट का 'आर्यभटीयम्' ग्रन्थ तथा उनके द्वारा सहस्रों वर्षों पूर्व ही खोले गए ब्रह्माण्ड के रहस्य, अवस्थिति, खगोल विज्ञान का उद्घाटन आदि–आदि सभी विज्ञान सम्मत रहे हैं; निर्मूल, निराधार नहीं। यह सब विद्याओं और ज्ञान की कुशलता व समृद्धता का प्रमाण है।

भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के प्रतिपादक विभिन्न ग्रन्थों में ऐसी–ऐसी श्रष्ठ और उत्कृष्ट विद्याओं तथा उनमें सिद्धहस्त व्यक्तियों के प्रमाण व वर्णन मिलते हैं, जो कि विभिन्न असम्भव व दुष्कर कार्यों को मात्र स्वविद्यानिपुणताओं के बल पर सम्पादित व सफल बना लेते थे। जाहिर है– प्राचीन समय में आधुनिक समय की भाँति विकसित व उन्नत विज्ञान और तकनीकें न थीं, किन्तु इस तथ्य की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि इतिहास में भी विभिन्न कालों व युगों में मानव का स्वयं का विवेक, मेधा, लगन और आत्मविश्वास व कौशल ही इतना प्रबल एवं श्रेष्ठ थे कि वे अपने विशिष्ट ज्ञान, प्रयास, अनुभव, अभ्यास और विद्या व कला की दक्षता, तप–साधनादि से प्रत्येक क्षेत्र में हर कार्य को बड़ी ही निपुणता व दक्षता के साथ सफल बना लेते थे। परन्तु इसके लिए चित्त की एकाग्रता, जिज्ञासा, लगन, व्यवहार व सिद्धान्त में सदाचार, नीति व धर्ममार्ग का वरण और अनुगमन परमावश्यक देखा गया है। विभिन्न शास्त्रग्रन्थों आर ऐतिहासिक युगों के पात्र एवं विभूतियाँ विभिन्न कला–कौशलों और विद्याओं की सिद्धि, प्रयोग एवं आदान–प्रदान व शिक्षण– प्रशिक्षणादि में निपुण रहे हैं।[7] कला–वैशिष्ट्य व विद्या–नैपुण्यता के कारण व्यक्ति, स्थान व वस्तुविशेष की प्रसिद्धि, कीर्ति और महत्व के उदाहरण व प्रमाण इतिहास में बहुशः प्राप्त होते हैं। रामायण–महाभारत काल में दशरथ, राम, कर्ण, अर्जुनादि की धनुर्विद्या में निपुणता; महर्षि वाल्मीकि, विश्वामित्र, व्यास, वशिष्ठादि तथा अन्यान्य ऋषि–महर्षियों का ब्रह्मविद्या व अन्यान्य बहुत–सी विद्याओं और विभिन्न शास्त्रों में प्रवीणता, रावण, मेघनाद तथा राक्षसवंशी अनेक लोगों का मायाजाल व अन्यान्य चमत्कारिक विद्याओं में उत्कर्ष, विद्याधरों का विभिन्न श्रेष्ठ विद्याओं को धारण करने के कारण ही विद्याधर होना तथा इसी के कारण उनके एक पृथक् 'विद्याधर वंश' का अस्तित्व – "कुले विद्याधरा जाता विद्याधरणयोगतः।।"[8] कलाओं की उत्कृष्टता व निपुणता के कारण विभिन्न कलाओं में दक्ष कलाकारों का अस्तित्व तथा सर्वकला विशारदता के विविध वर्णन प्राचीन इतिहास की विद्या–कला निपुणता–कुशलता के सूचक व प्रमाण हैं।

प्राचीन इतिहास से लेकर उत्तरोत्तर बढ़त अर्थात् वैदिक काल से लेकर निरन्तर उत्तरोत्तर प्रवाहित होते हुए विभिन्न कालों में वेदविद्या, ब्रह्मविद्या, शस्त्रास्त्र विद्या, विभिन्न शास्त्रों और कलाओं – ज्योतिष, धनुर्वेद, व्याकरण, संगीत, नाट्य, नृत्य, आयुर्वेद–चिकित्सा, गायन–वादन, चित्रकला, वास्तु, शिल्पादि–आदि विभिन्न कलाओं और बहुत–सी अन्यान्य विद्याओं की अवस्थिति की भरमार व निदर्शन भारतीय विद्या वैशिष्ट्य व कला निपुणता का पुष्ट प्रमाण हैं। भूत, भविष्य, वर्तमान– त्रैकालिक ज्ञान को एक ही स्थान पर बैठे–2 जान लेना और तत्–तत् कालों की घटनाओं व बातों और परिवेश व परिस्थितियों आदि सभी को साक्षात् देखना, अनुभव करना आदि–आदि चमत्कारिक विद्याएँ इतिहास में रही हैं।

आज हम विज्ञान और तकनीकी के अत्याधुनिक आविष्कारों व बहुविध विकास के चलते प्रत्येक क्षेत्र में प्राचीन समय की अपेक्षा अधिक कुशल व सफल होने का दम्भ भरते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में की गई प्रगति व आविष्कारों को 21वीं शती की उपलब्धि व इस क्षेत्र में विशिष्टता के लिए गर्व करते हैं। परन्तु इस सत्य के साथ प्राचीन सत्य को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता; जहाँ सुश्रुत, धन्वंतरि, चरक, पतञ्जलि व अन्यान्य विभिन्न विद्वानाचार्यों ने अपनी विद्या–प्रवीणता तथा कुशलता और दक्षता से बिना आधुनिक तकनीकों के भी प्राचीन समय में सफल चिकित्साएँ व उपचार करने की विद्या व कलाएँ दी हैं। इस आचार्यों ने पूरे–के–पूरे शास्त्रों–संहिताओं में अपना ज्ञान–विज्ञान, विद्याएँ और कलाएँ उड़ेल कर रख दी हैं।[9] सश्रुत संहिता में 101 शल्य यंत्रों का उल्लेख, इनकी आकृति, उपयोग आदि की विधि और जटिल शल्य चिकित्साओं आदि का वर्णन व तत्काल में प्रचलन आज भी आश्चर्यजनक हैं– यन्त्रशतमेकोत्तरम् अत्र हस्तमेव प्रधानतमं.....तदधीनत्वाद्यन्त्रकर्मणाम्।।[10] रसायन विद्या–विशेषज्ञ आचार्य नागार्जुन का नाम, काम व विद्या विशेषज्ञता–निपुणता इतिहास प्रसिद्ध है।

प्राचीन काल में चिकित्सा शास्त्र–आयुर्वेद का इतना सटीक ज्ञान कि विभिन्न रोगों, रोग–निदान और उनका उपचार शत–प्रतिशत किया जाता था।[11] विभिन्न कुशल वैद्य पर्वतों पर उगने वाली वनस्पतियों, जड़ी–बूटियों, औषधियों के कुशलज्ञाता होते थे और उन्हीं से विभिन्न औषधियाँ रोगानुसार तैयार कर उनके लेपन, सेवन एवं सुँघाने से किसी भी प्रकार के रोग, घाव, पीड़ा और विकारों का शमन व क्षय कर व्यक्ति एवं जीव–जन्तुओं को पूर्णरूपेण स्वस्थ कर देते थे। विशल्यकरणी, संजीवनी, संधानी, सावर्ण्यकरणी, रोहिणी, सहस्रपर्णी, शंखपुष्पी, कल्याणी एवं इसी प्रकार अन्यान्य विभिन्न औषधियों तथा जड़ी–बूटियों से रोग चिकित्सा के उल्लेख प्राचीन वाङ्मय में प्राप्त होते हैं।[12]

आज पूरा विश्व प्राचीन भारतीय ज्ञान–विज्ञान आर विभिन्न विद्याओं का लोहा मान रहा है। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी एवं उससे पूर्व से चली आ रही विभिन्न बीमारियों तथा रोगपीड़ाओं के निस्तारण के लिए योग विद्या, प्राकृतिक चिकित्सा, ताजा व शुद्ध शाकाहार भोजन आदि के प्रभाव व चमत्कार विश्वविदित हो चुके ह। आज जहाँ विभिन्न रोग चिकित्साओं के रूप में विश्व का विज्ञान व उपचार असफल हो चुके हैं, वही भारत की योग विद्या, प्राकृतिक एवं वानस्पतिक औषधीय सामग्री[13] से रोगों की चिकित्साएँ की जा रही हैं; यह भारतीय विभिन्न विद्याओं की समृद्धता व वैशिष्ट्य है।

प्राचीन कलाओं में विभिन्न ललित कलाएँ, शिल्पकलादि को बहुविध साक्षात् भी देखा जाता है तथा विभिन्न इतिहास ग्रन्थों, शास्त्रों व पत्र–पत्रिकाओं से भी प्राप्त जानकारी होती है। विविध कलाओं की उत्कृष्टता व प्रकर्ष भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।[14] क्योंकि यह विभिन्न कालों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिकाध्यात्मिक, दार्शनिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक और राजनैतिक परिवेश–परिस्थितियों तथा जनजीवन की साक्षात् अभिव्यक्ति है। संगीत मात्र एक ललित कला या मनोरंजन का साधन नहीं, वरन् अध्यात्म प्रधान वह कला एवं साधना रही है,[15] जिसके द्वारा इश्वर भक्ति व प्राप्ति का उद्देश्य साधा जाता था और विभिन्न संगीतमय शैलियों द्वारा ही धर्म–कर्म सम्पादित किए जाते थे,[16] तो वहीं भिन्न–भिन्न क्षेत्रों का लोकसंगीत मनोरंजन परक होने के साथ ही बहुरंगी मानवजीवन व परिवेश का सच्चा इतिहास, गौरवगाथा और सामाजिक–नैतिकादर्श प्रस्तुत करता रहा है।[17]

शिल्प के अन्तर्गत परिगणित होने वाले विभिन्न शिल्प– मूर्तिकला, धातुशिल्प और वास्तुशिल्प के द्वारा विभिन्न प्रकार की वस्तुओं व सामग्री निर्माण की दृष्टि से भारतीय इतिहास खूब समृद्ध रहा है।[18] विभिन्न कालों व युगों में ये कलाएँ भाँति–भाँति से न केवल सौन्दर्य, अलंकरण या साज–सज्जा का बहुशः उत्कर्ष व आधिक्य सूचित करती हैं, प्रत्युत् हमारी संस्कृति के विविध पक्षों और इतिहास की विभिन्न घटनाओं की भी साक्षात् अभिव्यक्ति होने के कारण ऐतिहासिक विरासत एवं सांस्कृतिक निदर्शन हैं।

मौययुगीन, शुंगयुगीन, कुषाणयुगीन ऐतिहासिक अवशेष भी तत्–तत् कालों में विभिन्न कलाओं की समृद्धता व कला–प्रेम की अभिव्यक्ति हैं। भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' माने जाने वाले गुप्तकाल में कलाओं की अभूतपूर्व उन्नति व समृद्धता देखी जा सकती है।[19] चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुशिल्पादि के अनेक सुन्दर तथा उत्कृष्टतम नमूने इस काल की देन रहे। बाघ तथा अजन्ता की गुफाओं के अन्दर विद्यमान अनेक स्तम्भ तथा गुफाओं की चित्रकारी, मध्यप्रदेशस्थ भिलसा के समीप उदयगिरि का गुफा मंदिर, भुमरा का शिव मंदिर, नाचना कुठार का पार्वती मंदिर, तिगवा का विष्णु मंदिर, साँची तथा गया में गुप्तकालीन बौद्ध मठ, वस्त्रों एवं आभूषणों से सुसज्जित विभिन्न देवताओं और मानवों की मूर्तियाँ तथा इनमें भावों का सुन्दर एवं स्पष्ट परिलक्षित होने वाला अंकन, नवीनता व सजीवता, एकमुखी, चतुर्मुखी शिवलिंग एवं शिव के अर्द्धनारीश्वर रूप की रचना एवं अन्यान्य विभिन्न स्थल, वस्तुएँ, स्मारक, मूर्तियाँ, इमारतें आदि कला–कौशल की समृद्धि व उत्कर्ष का प्रमाण हैं। इस काल में मथुरा, बनारस, पटना तथा अन्य कई स्थल कला के प्रसिद्ध व प्रमुख केन्द्र रहे। धातुकला, मुद्रानिर्माण कला का पर्याप्त विकास व विशिष्टताएँ तत्कालीन कला–कौशल की समृद्धता का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।[20] महरौली का लौहस्तम्भ, नालन्दा में महात्मा बुद्ध की ऊँची ताम्रप्रतिमा, सिक्कों पर अंकित भारतीय प्रतीकों, अक्षरों, पशु–पक्षियों और देवी–देवताओं के चित्र, छाप अथवा प्रतिकृति आदि–आदि प्रमाण भिन्न–भिन्न कला–कौशलों की साक्षात् अभिव्यक्ति होने के साथ ही प्राचीन भारतीय कलाओं की उत्कृष्टता अथवा कहना चाहिए कि कला–कुशलता की पराकाष्ठाएँ हैं। इस छोटे से शोधालेख में सबका मात्र नामशः उल्लेख भी सम्भव नहीं है।

निष्कर्ष–

कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारा इतिहास विभिन्न उत्कृष्ट, विलक्षण और रहस्यमयी विद्याओं तथा अद्वितीय कला–कुशलताओं के भण्डारों से सराबोर है। परन्तु आज हम देखें तो पातें हैं कि वर्तमान युवा पीढ़ी का रुझान इन विद्याओं व कलाओं की ओर न होकर आधुनिक विज्ञान व तकनीक अथवा मशीनी क्षेत्रों और सम्बद्ध कार्य–व्यापारों की ओर बढ़ रहा है; अतः वे प्राचीन विद्या–कलाओं की पूर्णतः उपेक्षा कर आधुनिक तकनीक की ओर भाग रहे हैं। हाँ! केवल कुछेक लोग हैं, जो प्राचीन विद्याओं व कलाओं के प्रति जागरूकता व रुचि रखते हैं; किन्तु केवल कुछेक लोगों की जागरूकता पर्याप्त नहीं। हमें अपने इन प्राचीन विद्या व कला–कौशलों को पीढ़ी–दर–पीढ़ी बनाए व बचाए रखना है, तो इस ओर सभी को आकर्षित व गम्भीर होना होगा।

21वीं शती में पूरा विश्व और मानव कितना ही आधुनिक व प्रत्येक क्षेत्र में विकसित और उन्नत क्यों न हो गया हो और आगे भी भले ही होता रहे, किन्तु उसे अपनी विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु अन्ततः इतिहास में अवश्यमेव झाँकने, वहाँ से समस्या–समाधान के साधनोपाय ढूँढने और अपनाने पर विवश होना ही पड़ रहा है। क्योंकि जो विभिन्न रोगों, समस्याओं व किंकर्तव्यविमूढ़ताआ का समाधान और निस्तारण इतिहास में प्राप्त होता है, वह आज भारी धन–सम्पदा खर्च करके तथा अतिविकसित तकनीक, विज्ञान और मशीनीकरण भी नहीं कर सकता है।

प्राचीन ललित कलाएँ, शिल्प कलाएँ एवं अन्यान्य भाँति–भाँति के कला–कौशल के नमूनों को देखकर मन–मस्तिष्क प्रफुल्लित हो उठता है तथा शान्ति, सुख, आनन्द, संतोष का व समस्त सकारात्मक भावों का संचार व अनुभव होता है। कहीं भी भद्दापन, भौंडापन, अश्लीलता, चित्त–विचलन की स्थिति नहीं देखी जा सकती। अतः आज हम सभी को आवश्यकता है– वर्तमान आधुनिक विकास व उन्नति के साथ भी चलें और अपनी धरोहरस्वरूप विद्याओं व कलाओं की साधना भी करें; जिससे आधुनिकता व प्राचीनता के साथ सम्यक् सामञ्जस्यपूर्वक जीवन की समस्याओं व विभिन्न कार्यों को आसान, सफल व सुकर बनाया जा सके। इसके लिए प्राचीन विद्याओं व कलाओं के प्रति सम्मान व श्रद्धा होना परमावश्यक है।

REFERENCES

1. पुराण विमर्श, पृ–3 पर वायुपुराण, 1/203 से उद्धृत
2. प्राचीन भारत का इतिहास, अध्याय–2
3. महाभारत, आदिपर्व/62/53 एवं स्वर्गारोहण पर्व/5/50
4. महाभारत, आदिपर्व/1/19, 54, 87, 2/39,385, उद्योगपर्व, 136/18 एवं स्वर्गारोहण पर्व/5/36,51,57
5. महाभारत, आदिपर्व/1/67
6. नाट्यशास्त्र – भरतमुनि
7. (i) भारत की प्राचीन संस्कृति, पृष्ठ – 209–18

   (ii) प्राचीन भारत का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास

   (iii) प्राचीन भारत का इतिहास

   (iv) कठोपनिषद्, अध्याय–1/वल्ली–1
8. जैन पद्मपुराण, 6/210
9. (i) सुश्रुत संहिता, चरक संहिता, योगशास्त्र–पतञ्जलि, अथर्ववेद एवं अन्यान्य विभिन्न आयुर्वेद व चिकित्सा ग्रन्थ।

   (ii) स्वर मंगला, भाग 1–2
10. सुश्रुत संहिता, 7/3

11. (i) भारत की प्राचीन संस्कृति, अध्याय–12

(ii) चरकसूत्र, 4/5

(iii) वाल्मीकि रामायण, 2/100/60, 6/91/22–23, 2/83/14

(iv) अथर्ववेद, 4/12/2–7

12. (i) वाल्मीकि रामायण, 1/45/31–32, 2/10/30, 6/91/21–28, 6/83/12, 6/101/30–32,45

(ii) अथर्ववेद, 4/12 सूक्त, 19/44,45 एवं 6/139/1

13. (i) आरोग्य शाकाहार : जीवन का श्रृंगार

(ii) योगदर्शन–अष्टांग योग, पतञ्जलि

(iii) अथर्ववेद, 1/22–25 एवं 2/27 सूक्त

(iv) योग साधना व योग चिकित्सा रहस्य

14. (i) शोध कल्पितम्

(ii) प्राचीन भारत का इतिहास।

(iii) भारत की प्राचीन संस्कृति

15. शोध कल्पितम्, पृष्ठ 177–78

16. सामवेद एवं देखें– संस्कृति एवं सौन्दर्य, अध्याय, 2 एवं 13

(i) प्राचीन भारत का साहित्यिक व सांस्कृतिक इतिहास, अध्याय–2

(ii) सामवेद तथा जैमिनीय सूत्र– "गीतिषु सामाख्या।"

(iii) चैतन्य सम्प्रदाय और संगीत

17. शोध कल्पितम् – पृ. 59

18. (i) प्राचीन भारत का इतिहास।

(ii) भारत की प्राचीन संस्कृति, अध्याय 11

19. (i) प्राचीन भारत का इतिहास, अध्याय 34–35

(ii) प्राचीन भारत का साहित्यिक व सांस्कृतिक इतिहास, अध्याय –7, पृ. 340–42

20. (i) प्राचीन भारत का इतिहास

(ii) भारत की प्राचीन संस्कृति, अध्याय 11–12

(iii) प्राचीन भारत का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, अध्याय–7

1. पुराण विमर्श, बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्या भवन, तृतोय संस्करण–1987

2. प्राचीन भारत का इतिहास, विद्याधर महाजन, एस. चन्द एण्ड कम्पनी लिमिटेड, दिल्ली 2000

3. महाभारत गीताप्रेस, गोरखपुर प्रकाशन

4. भारत की प्राचीन संस्कृति, रामजी उपाध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण–2003

5. प्राचीन भारत का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डॉ. निरंजनसिंह 'योगमणि', रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर

6. कठोपनिषद्, डॉ. रामदेव साहू, श्याम प्रकाशन, जयपुर, प्रथम सं.–2000

7. जैन पद्मपुराण, रविषेणाचार्यकृत, भाग–1, भारतीय ज्ञानपीठ, नौवाँ सं.–2001

8. स्वर मंगला, भाग 1–2, राजस्थान संस्कृत अकादमी से प्रकाशित त्रैमासिकी संस्कृत शोध पत्रिका, अक्टूबर–दिसम्बर, 2021 एवं जनवरी–मार्च, 2022 अंक।

9. वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस गोरखपुर प्रकाशन, बीसवाँ संस्करण, संवत् 2056

10. आरोग्य शाकाहार : जीवन का श्रृंगार, डॉ. किरण गुप्ता, रचना प्रकाशन, जयपुर, सं.–2015

11. योग साधना व योग चिकित्सा रहस्य, स्वामी रामदेव, दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

12. शोध कल्पितम्, मानविकी, समाज विज्ञान, कला एवं संस्कृति की द्विभाषीय अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधानिका, जनवरी–जून, 2016, वॉल्यूम–1

13. चैतन्य सम्प्रदाय और संगीत, नीलम सैम्भी, प्रिंटवैल, जयपुर, प्रथम सं.–1994